بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 27 फ़रवरी 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(तबलीग़ महीने की तिथि 27,,,,,1405 हश)

तौहीदे इलाही के तनाज़ुर (परिवेश) में सीरते नबवी ﷺ का ईमान को बढ़ाने वाला तज़्किरा (वर्णन)।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-27.02.2026

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरह अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- तमाम अम्बिया दुनिया में तौहीद के क़याम के लिए आए हैं और उन्होंने अपनी कौमों को इसी की तालीम दी। आँहज़रत ﷺ भी इसी पैग़ाम को लाकर आए, इसी काम को जारी रखने के लिए आए। आप स. ने शिर्क के ख़िलाफ़ अगर जहाद किया तो बिना दलील के नहीं, बल्कि शिर्क की बुराई समझाई और इसको समझाकर इसके खिलाफ नफ़रत पैदा की। आप स. की यह तालीम जिसने आप स. के मानने वालों पर असर किया, इस लिए असरदार थी कि ख़ुद आप स. का हर क़ौल व अमल इसकी हक़ीक़ी (वास्तविक) तसवीर था। आप स. को चिंता थी कि जिस तरह दूसरी क़ौमों ने अपने नबियों की क़ब्रों को सजदे की जगह बना लिया है, मुस्लिम उम्मत में भी यह भयानक गुनाह पैदा न हो जाए। क़ुरआन करीम में हमें बार बार मुख्तलिफ़ (विभिन्न) पहलुओं से तौहीद की तालीम दी गई है।

जैसे कि अल्लाह तआला सूरः अम्बिया में फ़रमाता है- **व मा अरसलना मिन क़बलिका मिर्रसूलिन इल्ला नूही इलैही इन्नाहू ला इलाहा इल्ला अना फ़ाबुदून।** और हमने तुझसे पहले कभी कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम उसकी तरफ़ व्हई करते थे कि यक़ीनन मेरे सिवा कोई मअबूद (पूजनीय) नहीं, पस मेरी ही इबादत करो।

और क़ुरआन करीम के आख़िर में अल्लाह अपनी तौहीद का एलान फ़रमाता है"**कुल हुअल्लाहु अहद। अल्लाहुस-समद। लम यलिद वलम यूलद। वलम यकुल्लहु कुफुवन अहद।** यानी: वह अल्लाह एक ही है। अल्लाह बेनियाज़ है (सबसे निरपेक्ष और स्वयं-संपूर्ण) है। न उसने किसी को जन्म दिया है और न उसने स्वयं जन्म लिया है। और उनका कभी कोई समकक्ष (बराबरी करने वाला) नहीं हुआ। अल्लाह तआला ने यहां हर प्रकार के शिर्क (साझेदारी) के रद्द (खंडन) का एलान (घोषित) किया है। आँहज़रत ﷺ की फ़ितरत इतनी पवित्र थी कि तौहीद की मुहब्बत आप स. के रग-ओ-रेशे में (रोम रोम में) बसा दी गई थी।

हुज़ूर फ़रमाते हैं- आँहज़रत ﷺ की सीरत की कुछ घटनाएं पेश करता हूँ।

हज़रत उम्म-ए-एमन रज़ी0 का बयान है कि "बुवाना" नाम का एक बुत (मूर्ति) था, जिसकी कुरैश बहुत इज़्ज़त करते थे और वहाँ हाज़िरी देते थे। अबू तालिब भी अपनी क़ौम के साथ वहां जाते और रसूलुल्लाह ﷺ को भी साथ ले जाना चाहते थे, लेकिन आप ﷺ इन्कार कर देते थे। एक बार अपने फूफियों के बहुत ज़ोर देने पर वहाँ चले गए, मगर सख़्त डर की हालत में वापस आ गए और फ़रमाया: "मैं वहाँ एक अजीब मंज़र (दृश्य) देखा। जैसे ही मैं उस बुत के नज़दीक जाने लगता हूँ, तो एक सफ़ेद कपड़ों वाला व्यक्ति चिल्ला कर कहता है: 'ए मुहम्मद(ﷺ)! पीछे रहो और इस बुत को मत छूना।

नबुव्वत मिलने से पहले भी आप ﷺ खुदाए-वाहिद (एक अल्लाह) की इबादत के लिए ग़ार-ए-हिरा (हिरा नामक गुफा) में जाया करते थे, जो मक्का से तीन मील की दूरी पर है और आजकल उसको जबल-नूर कहा जाता है। नबी करीम ﷺ जब चालीस साल के हुए, तो एक दिन जिब्रईल अलै. नमूदार हुए और नबी स. पर सबसे पहली व्हई नाज़िल हुई। पहली व्हई के साथ ही आँहज़रत ﷺ ने लोगों को तौहीदे बारी तआला की तरफ़ बुलाना शुरू किया और शिर्क के ख़िलाफ़ तालीम देने लगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि हमारे नबी ﷺ सच्चाई के इज़हार के लिए एक मुजद्दिदे आज़म (महान सुधारक) थे जो गम शुदा सच्चाई को दोबारा दुनिया में लाए। इस गर्व में हमारे नबी ﷺके साथ कोई भी नबी शरीक नहीं कि आप स. ने पूरी दुनिया को एक तारीकी (अन्धकार) में पाया और फिर आपके ज़हूर (प्रकट) से वह तारीकी नूर से बदल गई। जिस कौम में आप प्रकट हुए थे, आपने उस समय तक इस संसार से प्रस्थान (फौत) नहीं किया, जब तक कि उस पूरी कौम ने शिर्क का चोला उतार कर तौहीद का जामा (वस्त्र) नहीं पहन लिया, और इतना ही नहीं, बल्कि वे लोग ईमान के मरातिबे आला (उच्चतम स्तर) तक पहुंच गए। और सत्य, वफ़ादारी और दृढ़ विश्वास के ऐसे कार्य सामने जिसके उदाहरण दुनिया के किसी भी हिस्से में नहीं पाए जाते। इतनी शानदार सफलता किसी भी नबी को, हमारी नबी ﷺ के अलावा प्राप्त नहीं हुई। यही आपकी नबूवत (पैगंबरी) की एक बड़ी दलील है आप स. की बबुव्वत पर कि आपको ऐसे समय भेजा गया जब दुनिया अंधेरे में डूब गई थी। और आप उस समय दुनिया से विदा हुए जब लाखों मानव शिर्क और मूर्तिपूजा को छोड़ कर तौहीद और सीधा रास्ता अपना चुके थे। बिला शुबा (निःसंदेह) हमारे नबी ﷺ रूहानियत क़ायम करने के

लिहाज़ (दृष्टि) से आदमे सानी (दूसरे आदम) थे बल्कि हक़ीक़ी आदम वही थे जिनके ज़र्ये (द्वारा) और जिनके कारण तमाम इंसानी फ़ज़ायल (क्षमताएं, कौशल) कमाल को पहुंचे।

हुज़ूर फ़ार्माते हैं: अफ़सोस! आज उम्मत-ए-मुहम्मदिया भी तौहीद के एज़ाज़ (सम्मान) को भूलती जा रही है जिसकी तलकीन हमें आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाई थी। तौहीदे ख़ालिस (शुद्ध एकेश्वरवाद) को भूलने की वजह से अल्लाह तआला की सिफ़ात भी वह ख़ालिस ईमान नहीं रहा जो एक मुसलमान का ख़ासा (विशेषता) होना चाहिए। ऐसे में आँहज़रत ﷺ के सच्चे ग़ुलाम के मानने वालों का काम है कि वे तौहीद को समझें और अपने अन्दर ख़ास तबदीलियां पैदा करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: यह इबादत का ख़ास महीना है। रमज़ान में इसके लिए ख़ास तौर पर कोशिश होनी चाहिए और इसके लिए दुआ करनी चाहिए। आँहज़रत ﷺ ने अपनी तमाम ज़िन्दगी में जिस तरह तौहीद के क़याम के लिए कोशिश की, अगर हमें आप स. मुहब्बत का दावा है तो हमें इसके लिए ख़ास कोशिश करनी पड़ेगी।

हज़रत मुस्लेह मौउद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि कुरान करीम में अल्लाह तआला रसूल करीम ﷺ से फरमाते हैं: ऐ मोहम्मद ﷺ ! तू दुनिया के कोने-कोने के लोगों को सावधान कर, लेकिन पहले अपने अज़ीज़ों (सम्बन्धियों) को सावधान कर, क्योंकि उनका तुझ पर दोगुना हक है। अतः रसूलुल्लाह ﷺ हुक्म की तामील (आदेश के पालन) में मक्का के दस्तूर के मुताबिक़ सफ़ा नामक पहाड़ी पर खड़े हो गए और अलग अलग क़बीलों का नाम लेकर बुलाना शुरू किया। जब मक्का वाले जमा हो गए तो रसूले करीम ﷺ ने फ़रमाया, देखो! अगर मैं तुमसे यह कहूं कि इस पहाड़ के पीछे एक महान सेना जमा है जो तुम पर हमला करना चाहता है तो क्या तुम मेरी बात मानोगे? उन्होंने कहा क्यूं नहीं, हम आपकी बात मानेंगे, क्यूंकि हमने हमेशा आपका रास्त बाज़ अर्थात सच्चा पाया है। इस पर आप स. ने फ़रमाया- लोगो सुनो! मैं तुम्हें एक अहम् खबर (महत्व पूर्ण सूचना) देता हूँ। मुझे अल्लाह की तरफ़ से रसूल बना कर भेजा गया है। तुम अगर अल्लाह तआला के अज़ाब से बचना चाहते हो तो मेरी पैरवी करो। आप स. यह कहना था कि अबू लहब जोश से कहने लगा कि नऊज़ुबिल्लाह, तुझ पर हलाकत (विनाश) हो, इतनी सी बात के लिए तू ने हमें जमा किया था। और इसी तरह दूसरे लोग मज़ाक़ उड़ाते हुए चले गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं: जब कोई नबी या रसूल ख़ुदा की ओर से भेजा जाता है और उसके समुदाय के लोग होनहार, सच्चे, साहसी और प्रगतिशील होने वाले दिखाई देते हैं, तो उसके बारे में उस समय की क़ौमों और फ़िरकों के दिलों में ज़रूर एक प्रकार का बुगज़ (द्वेष) और हसद (ईर्षा) पैदा हो जाता है ..... आँहज़रत ﷺ के समय में मुशरिकों और यहूदियों और ईसाइयों के आलिमों को इसी भावना ने हक़ के कुबूल करने से महरूम रखा बल्कि घोर दुश्मनी पर उकसा दिया। अतः वे इस चिंता में लग गए कि किस तरह इस्लाम को दुनिया से मिटा दें और चूंकि मुसलमान इस्लाम के इब्तदाई (आरंभिक) ज़माने में थोड़े थे इस लिए उनके मुखालिफ़ों (विरोधियों) ने मुसलमानों यानी सहाबा से बड़ी दुश्मनी का सलूक किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं: जब विरोध तेज़ हो गया और रसूल करीम ﷺ और आपके सहाबा ने मक्के के लोगों को यह संदेश देना शुरू कर दिया कि इस दुनिया का एक ही ख़ुदा है, उसके सिवाए कोई

पूज्य नहीं है। सभी नबी तौहीद का इक़रार करते थे और अपनी क़ौम को भी इसी शिक्षा की तरफ़ बुलाया करते थे। तुम भी ख़ुदाए वाहिद पर ईमान लाओ और इन पत्थरों के बुतों को छोड़ दो, ये बिल्कुल बेकार हैं। तुम देखते नहीं कि तौहीद को छोड़ कर तुम्हारे विचार भी गन्दे और दिल भी अंधेरे हो गए। हलाल-हराम की पहचान नहीं रही। अच्छे और बुरे में फ़र्क नहीं कर सकते, अपनी माओं का अपमान करते हो, अपनी बहनों और बेटियों पर अत्याचार करते हो और उनके हक़ (अधिकार) नहीं देते। अपनी बीवियों से तुम्हारा सलूक अच्छा नहीं, यतीमों का हक़ मारते हो और बेवाओं (विधवाओं) के साथ बुरा सलूक करते हो। नबियों ने कहा कि ख़ुदाओं का क़ुर्ब (निकटता) पाने का तरीका यह है कि हर हकदार को उसका हक दो, औरतों का सम्मान करो और उनका हक़ अदा करो, यतीमों को अल्लाह की अमानत समझो और उनकी ख़बर-गीरी को आला दर्जे की नेकी समझो, विधवाओं का सहारा बनो। न्याय और अदल ही नहीं बल्कि दया और एहसान को भी अपना शिआर (चलन) बनाओ। जब मक्का के लोग इस्लाम की ओर बढ़ने लगे तो एक दिन मक्का के सरदार जमा होकर अबू तालिब के पास आए और कहा: आप हमारे प्रमुख हैं, और आपके कारण हम मोहम्मद (ﷺ) को कुछ नहीं कहते हैं। अब समय आ गया है कि आख़री फैसला लिया जाए। या तो आप उन्हें समझाएं और पूछें कि वे हमसे क्या चाहते हैं। अगर उन्हें सम्मान, धन या शादी करना चाहते हैं तो हम इसके लिए तैयार हैं और मक्के की हर लड़की जो उसे पसंद हो उसे उसकी बीवी बनाने को तैयार हैं। हम बस इतना चाहते हैं कि वे हमारे बुतों को बुरा कहना छोड़ दें। यदि वे हमारी बात न माने तो या तो आपको अपने भतीजे को छोड़ना होगा या क़ौम आपकी रियासत से इनकार कर देगी।

अबू तालिब ने रसूलुल्लाह ﷺ को बुलाकर कहा- ऐ मेरे भतीजे! मेरी क़ौम मेरे पास यह पैग़ाम लाई है। आप स. ने फ़रमाया- ऐ मेरे चाचा! मैं यह नहीं कहता कि आप अपनी क़ौम को छोड़ दें और मेरा साथ दें। परन्तु मुझे एक अल्लाह की क़सम, यदि वे मेरे दाएँ हाथ पर सूरज और बाएँ हाथ पर चाँद भी रख दें, तब भी मैं ख़ुदाए तआला की तौहिद का वअज़ (प्रचार) करना न छोड़ूंगा। मैं अपने काम में लगा रहूंगा जब तक ख़ुदा मुझे मौत दे दे। यह इखलास (निष्कपट) से भरा जवाब अबू तालिब की आँखें खोलने के लिए काफ़ी था। उन्होंने कहा: ऐ मेरे भतीजे! जा और अपना फर्ज़ अदा करता रह। क़ौम अगर मुझे छोड़ना चाहती है तो बेशक छोड़ दे, मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा।

तौहीद के क़याम (स्थापना) के लिए आँहज़रत ﷺ और सहाबा किराम रज़ी. ने मक्का के काफिरों की ओर से हर तरह के अत्याचार और दुःख सहे। मक्का के काफिरों की तरह आज भी जिन क़ौमों में ये बुराइयां हैं, वो तौहीद से दूरी की वजह से ही हैं। हमारा काम है कि तौहीद का संदेश देते रहें और जहां तौहीद के पैग़ाम को पहुंचाएं, वहां अपनी रूहानी (आध्यात्मिक) और अख्लाक़ी (नैतिक) हालत में भी वाज़ह तबदीली (स्पष्ट परिवर्तन) लाने की कोशिश करें। अल्लाह ताला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ

فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131